श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं

श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका–अकारादिश्लोकानुक्रमणिका सहित

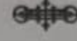


हिन्दी टीकाकार : आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

592



श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितं

श्रीपद्ममहापुराणम्

हिन्दीटीका–अकारादिश्लोकानुक्रमणी सहित

(षष्ट भाग : उत्तर खण्ड - II)

सम्पादक एवं टीकाकार

आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी

(श्रीधराचार्य)



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

दो सौ पैंतीसवाँ अध्याय

श्रीपार्वत्युवाच

पाषण्डानां च सम्वादं वर्जयेदिति यत्त्वया । उक्तं ममेह भगवञ्छ्वपचादपि गर्हितम्॥१॥

ते कीदृशाः समाख्याताः कैर्लिङ्गैश्चिह्निता भुवि ॥२॥

रुद्र उवाच

येऽन्यं देवं परत्वेन वदन्त्यज्ञानमोहिताः । नारायणाज्जगन्नाथात्ते वै पाषण्डिनः स्मृताः ॥३॥

द्वेष्टारो विष्णुभक्तानां ये चाऽवैष्णवसंश्रयाः ।

पाषण्डिभिश्च संयुक्तास्ते वै पाषण्डिनस्स्मृताः ॥४॥

कपालभस्मास्थिधरा ये ह्यवैदिकलिङ्गिनः। ऋते वनस्थाश्रमाच्च जटावल्कलधारिणः ॥५॥

अवैदिकक्रियोपेतास्ते वै पाषण्डिनस्तथा । शङ्खचक्रोर्ध्वपुण्ड्रादिचिह्नैः प्रियतमैर्हरेः ॥६॥

में प्रसन्न हो जाते हैं और उसको समस्त अभीष्ट वस्तुओं को प्रदान कर देते हैं ॥४२॥ हे देवि ! मैंने इस तरह उत्तम द्वादशी व्रत का वर्णन किया । अब कौन सी तुम दूसरी बात सुनना चाहती हो उसे मैं बतलाता हूँ ॥४३॥

इस तरह श्रीपद्ममहापुराण के छठे उत्तर खण्ड के उमा महेश्वर संवाद के अन्तर्गत द्वादशी माहात्म्य वर्णन नामक दो सौ चौंतीसवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ।।२३४।।



उमामहेश्वर सम्वाद के अन्तर्गत श्रीभगवान् द्वारा नमुचि आदि राक्षसों का मारा जाना और पाषण्ड की उत्पत्ति का वर्णन

श्रीपार्वतीजी ने कहा— आपने जो यह कहा है कि पाषण्डियों के साथ न बोले क्योंकि उन सबों को चाण्डाल से भी अधिक निन्दित कहा गया है ॥१॥ वे पाखण्डी किस तरह के होते हैं और उन सबों का चिह्न क्या हैं ॥२॥ **रुद्र ने कहा—** जो अज्ञान से मोहित भगवान् नारायण से भिन्न देवता को परा देवता बतलाते हैं वे पाखण्डी हैं ॥३॥ जो भगवान् विष्णु के भक्तों से द्वेष करते हैं तथा अवैष्णवों को अपना आचार्य बनाते हैं एवं पाखण्डियों के साथ रहते है उनको ही पाखण्डी कहा गया है ॥४॥ जो

रंहिता ये द्विजादेवि ! तेवै पाषण्डिनःस्मृताः ।
श्रतिस्मत्युदिताचारंयस्तुनाचरतिद्विजः ॥७॥
स पाषण्डीति विज्ञेयः सर्वलोकेषु गर्हितः । समस्तयज्ञभोक्तारमविदित्वाऽच्युतं हरिम् ॥८॥
उद्दिश्य देवता एव जुहोति च ददाति च। सपाषण्डीतिविज्ञेयः स्वतन्त्रः सर्वकर्मसु ॥९॥
स्वातन्त्र्यात्कुरुते यस्तु कर्म वेदोदितं महत्। विनावै भगवत्प्रीतिंसपाषाण्डीतिवैस्मृतः ॥१०॥
यस्तु नारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादिदैवतैः। समत्वे नैव वीक्षेत स पाषण्डीभवेत्सदा॥११॥
अवस्थात्रितये यस्तु मनोवाक्कायकर्मभिः । वासुदेवं न जानाति स पाषण्डीभवेद्द्विजः॥१२॥
किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणा येऽप्यवैष्णवाः । न स्प्रष्टव्यानवक्तव्या न द्रष्टव्याःकदाचन ॥१३॥

वसिष्ठ उवाच

एवं श्रुत्वाच सा देवी शङ्करेणाऽभिभाषितम् ।
विस्मयंपरमं गत्वा पुनःप्रोवाचभामिनी ॥१४॥

पार्वत्युवाच

भगवन्परमं गुह्यं पृच्छामि सुरसत्तम !। मयि प्रीत्या समाचक्ष्व संशयो वर्त्तते भृशम्॥१५॥
कपालभस्मचर्मास्थिधारणं श्रतिगर्हितम् । तत्त्वया धार्यते देव ! गर्हितं केन हेतुना ॥१६॥
स्त्रीचापल्येन देवेश ! पृच्छामि त्वां महामते ! ।
महानुभावकथितं न कर्त्तव्यं महेश्वर ! ॥१७॥

अवैदिक चिह्नों को धारण करते हैं तथा कपाल, अस्थि तथा भस्म धारण करते हैं, वानप्रस्थ आश्रम के बिना भी जटाधारण करते हैं ॥५॥ अवैदिक क्रिया करते हैं, वे ही पाषण्डि कहे गये हैं । श्रीहरि को अत्यन्त प्रिय शङ्ख, चक्र तथा ऊर्ध्वपुण्ड्र आदि चिह्नों से रहित जो ब्राह्मण हैं हे देवि ! वे ही पाषण्डि कहे गये । श्रुतियों तथा स्मृतियों में बतलाये गये आचरण को जो ब्राह्मण नहीं अपनाते हैं ॥६-७॥ उन सबों को पाषण्डि समझना चाहिए तथा वे सभी लोकों में निन्दित हैं । सभी यज्ञों का भोग करने वाले श्रीहरि ही हैं, इस बात को नहीं जानकर जो अन्य देवता का उद्देश्य करके होम करता है और दान करता है उसको पाषण्डी समझना चाहिए तथा जो सभी कर्मो में अपने को स्वतंत्र मानता है । जो अपने मन से स्वतंत्रता पूर्वक वैदिक कर्मो को करता है, भगवान् की प्रसन्नता के लिए नहीं करता है वह पाषण्डी है ॥८-१०॥ जो भगवान् नारायण को ब्रह्मा आदि देवताओं के समान ही मानता है वह सदा पाषण्डी ही होता है । जो तीनों अवस्थाओं मे मन, वाणी और शरीर से भगवान् वासुदेव को नहीं जानता है वह पाषण्डी है ॥११-१२॥ बहुत इस विषय में क्या कहना है जो भी ब्राह्मण वैष्णव नहीं हैं उन सबों को न तो छूना चाहिये, न उनसे बोलना चाहिए और न उन सबों को कभी देखना चाहिए ॥१३॥ **वसिष्ठ महर्षि ने कहा—** इस तरह से शङ्करजी की बात को सुनकर पार्वती देवी अत्यन्त आश्चर्यित होकर पुनः पूछीं॥१४॥ **पार्वतीजी ने कहा—** हे देवश्रेष्ठ भगवन् ! अत्यन्त रहस्य की बात मैं आपसे पूछती हूँ । मुझे अत्यन्त संशय है मुझ पर कृपा करके आप उसे बतलायें ॥१५॥ कपाल, भस्म, अस्थि तथा चर्म धारण श्रुति निन्दित हैं । हे देव ! उस निन्दित वस्तु को आप क्यों धारण करते हैं ॥१६॥ हे महामते ! हे देवेश ! स्त्रियोचित चंचलता के कारण मैं आपसे यह पूछती हूँ हे महेश्वर ! आपने ही उसे अकर्तव्य रूप से

त्वयाचरितमित्येतद्वक्तव्यं न क्वचित्प्रभो ! । अकर्त्तव्यमपि प्रश्नं क्षन्तुमर्हसि मे प्रभो ! ॥१८॥

वसिष्ठ उवाच

इतिदेव्या हरः पृष्टो रहस्ये जनवर्जिते। उवाच परमं गुह्यं यद्यदाचरितं स्वकम् ॥१९॥

शिव उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि यद्गुह्यं परमाद्भुतम् ।
न वक्तव्यं त्वया देवि ! जनेषु कथितं मया ॥२०॥

अपृथक्त्वाच्छरीरस्यवक्ष्यामितव सुव्रते ! । नमुच्याद्या महादैत्याःपुरास्वायम्भुवेऽन्तरे॥२१॥
महाबला महावीर्या महावीरा महौजसः । सर्वे विष्णुरताः शुद्धाः सर्वपापविवर्जिताः ॥२२॥
त्रयीधर्मवृताः सर्वे भगवद्भक्तिसंयुताः । निर्जित्य सकलान्देवानव्याहतपराक्रमाः॥२३॥
पदानि तेषां जगृहुर्बलवीर्यसमन्विताः । ततो देवगणास्सर्वे भग्ना इन्द्रपुरोगमाः ॥
विष्णोः समीपमागम्य भयार्त्ताः शरणं गताः ॥२४॥

देवाऊचुः

देवदेव ! महादैत्यैर्जम्भासुरपुरोगमैः । स्वात्स्वात्स्थानाच्च्याविताःस्तु भवन्तंशरणंगताः॥२५॥
अजेयान्सर्वदेवानां तपोनिर्द्धूतकल्मषान् । त्वमेवैतान्महादैत्याञ्जेतुमर्हसि केशव ! ॥२६॥

महादेव उवाच

इत्याकर्ण्य हरिर्वाक्यं देवानां च भयानकम् ।
तान्समाश्वास्य दिक्पालान्मामाह पुरुषोत्तमः ॥२७॥

बतलाया है ॥१७॥ हे प्रभो ! आपके द्वारा आचरण किया जाने वाला यह सबकुछ कहीं भी नहीं कहना चाहिए । हे प्रभो ! मुझे यह प्रश्न नहीं करना चाहिये फिर भी आप उसे क्षमा करेंगे ॥१८॥ **वसिष्ठजी ने कहा**— इस तरह से पार्वतीजी द्वारा निर्जन एकान्त में पूछे जाने पर शिवजी ने अपने सम्पूर्ण आचरणों को कहा ॥१९॥ **शिवजी ने कहा**— हे देवि ! जो अत्यन्त गोपनीय है, उसे मैं बतला रहा हूँ सुनो । हे देवि ! तुम मेरे द्वारा कही जाने वाली बातों को लोगों के बीच में न कहना ॥२०॥ हे सुव्रते ! तुम्हारा और हमारा शरीर अलग-अलग नही हैं इसीलिए मैं तुम्हें इस बात को बतलाता हूँ । पहले के स्वायम्भुव मन्वन्तर में नमुचि आदि महादैत्य ॥२१॥ महाबलवान् महापराक्रमी तथा महातेजस्वी और भगवान् विष्णु के भक्त एवं शुद्ध एवं पाप रहित थे ॥२२॥ भगवद् भक्ति से युक्त वे त्रयी धर्म का पालन करते थे । अव्याहत पराक्रम वाले वे सभी देवताओं को जीतकर ॥२३॥ उन देवताओं के पदों को ले लिए क्योंकि वे बल एवं पराक्रम से सम्पन्न थे । उसके पश्चात् इन्द्र आदि देवता भागकर भगवान् विष्णु के समीप आकर भयभीत होकर उनकी शरणागति कर लिए ॥२४॥ **देवताओं ने कहा**— देवाराध्य देव ! जम्भासुर इत्यादि महादैत्यों के द्वारा अपने-अपने पद से हटाये गये हमलोग आपके शरण में आये हैं ॥२५॥ वे सब सभी देवताओं के लिए अजेय हैं और तपस्या करके उन सबों ने अपने पापों को विनष्ट कर दिया है । हे केशव ! आप ही इन महादैत्यों को जीत सकते हैं ॥२६॥ **महादेवजी ने कहा**— श्रीहरि देवताओं के अत्यन्त भयानक वाक्यों को सुनकर उन दिक्पालो को सान्त्वना प्रदान करके भगवान् पुरुषोत्तम ने कहा ॥२७॥ हे महाबाहो

श्रीभगवानुवाच

त्वं हि रुद्र महाबाहो ! मोहनार्थे सुरद्विषाम् ।
पाषण्डाचरणं धर्मं कुरुष्व सुरसत्तम ! ॥२८॥
तामसानि पुराणानि कथयस्व च तान्प्रति। मोहनानिचशास्त्राणिकुरुष्व च महामते ! ॥२९॥
मय्यभक्ताश्चविप्राश्चभविष्यन्तिमहर्षयः । त्वच्छत्तयातान्समाविश्यकथयस्वचतामसान् ॥३०॥
काणादं गौतमं शक्तिमुपमन्युं च जैमिनिम्। कपिलं चैव दुर्वासोमृकण्डूचबृहस्पतिम् ॥३१॥
भार्गवं जामदाग्न्यंचदशैतांस्तामसानृषीन् । तवशक्त्यासमाविश्यकुरुष्वजगतोऽहितम् ॥३२॥
त्वच्छक्त्या च निविष्टास्ते तमसोद्रिक्तया भृशम् ।
तामसास्ते भविष्यन्ति क्षणादेव न संशयः ॥३३॥
कथयिष्यन्ति ते विप्रास्तामसानि जगत्रये । पुराणानिचशास्त्राणि त्वत्परत्वपराणिच॥३४॥
कपालचर्मभस्मास्थिचिह्नान्यमरसर्वशः । त्वमेव धृत्वा ताँल्लोकान्महोयस्व जगत्रये ॥३५॥
तथा पाशुपतं शास्त्रं त्वमेव कुरु सत्कृतः । कङ्कालशैवपाषण्डमहाशैवादिभेदतः ॥३६॥
अलक्ष्यं च मतं सम्यग्वेदबाह्यं नराधमाः । भस्मास्थिधारिणः सर्वेभविष्यन्तिह्यचेतसः॥३७॥
त्वां परत्वेन वक्ष्यन्ति सर्वशास्त्रेषु तामसाः । तेषां मतमधिष्ठायसर्वेदैत्याः सदानवाः॥३८॥
भवेयुस्ते मद्विमुखाः क्षणादेव न संशयः । अहमप्यवतारेषु त्वां च रुद्र ! महाबल ! ॥३९॥
तामसानां मोहनार्थं पूजयामि युगेयुगे । मतमेतदवष्टभ्य पतन्त्येव न संशयः ॥४०॥

महादेव उवाच

तच्छ्रुत्वाऽहं यथोक्तं तु वासुदेवेन भामिनि ! ।
समुद्विग्नमना दीनो बभूवाऽत्र वरानने ! ॥४१॥

रुद्र ! आप असुरों को मोहित करने के लिए हे सुरश्रेष्ठ ! पाषण्डाचरण स्वरूप धर्म का प्रवर्तन करें॥२८॥ उन सबों को आप तामस पुराणों को सुनायें । हे महामते ! आप अज्ञान फैलाने वाले शास्त्रों की रचना करें ॥२९॥ महर्षि गण और ब्राह्मण मेरे भक्त नहीं होंगे । अपनी शक्ति के द्वारा उन सबों में प्रवेश करके तामस शास्त्रों को उनको आप सुनायें ॥३०॥ काणाद, गौतम, शक्ति, उपमन्यु, जैमिनि, कपिल, दुर्वासा, मृकण्डु तथा बृहस्पति ॥३१॥ भार्गव, जामदग्न्य (परशुरामजी) ये दश ऋषि तामस हैं । आप अपनी शक्ति के द्वारा प्रवेश करके संसार का अकल्याण करें ॥३२॥ आपकी शक्ति से वे उन्हीं धर्मों को अपना लेंगे और उनमें बहुत अधिक तमोगुण उद्रिक्त हो जायेगा । वे क्षणभर में तामस हो जायेंगे इसमें कोई संशय नहीं है ॥३३॥ वे ब्राह्मण त्रेलोक्य में तामस धर्म को कहेंगे । वे सभी पुराण और शास्त्र आपके परत्व का प्रतिपादन करेंगे ॥३४॥ हे देव सर्वस्व ! आप ही, कपाल, चर्म, भस्म तथा अस्थि आदि चिह्नों को धारण करें और त्रैलोक्य में उन सबों को मोहित करें ॥३५॥ आप ही पाशुपतशास्त्र का निर्माण करें, कङ्काल, शैव, पाषण्ड, महाशैव आदि के भेद से ॥३६॥ वे नराधम अलक्ष्यमत तथा वेदबाह्य होकर सभी भस्म तथा अस्थि को अज्ञान के कारण धारण करेंगे ॥३७॥ वे सभी तामसी प्रकृति वाले आपको परादेवता कहेंगे। उन सबों के मत को अपनाकर सभी दैत्य एवं दानव ॥३८॥ क्षणभर में ही मेरे विरोधी हो जायेंगे। हे महाबलवान् रुद्र ! मैं भी अपने अवतारों में आपकी पूजा उन सबों को मोहित करने के लिए प्रत्येक

नमस्कृत्याऽथ तन्देवमब्रवं परमेश्वरम्। त्वयोदितमिदं देव ! करोति यदि भूतले॥४२॥
तस्मान्नाशो हि मे नाथ ! भविष्यति स संशयः ।
तत्र शक्यं मया कुर्तुमेतत्कृत्यं हरेऽधुना ॥४३॥
त्वदाज्ञाऽपिच नोल्लङ्घ्या एतद्दुखतरं महत्। एवमुक्ते ततो देवि समाश्वास्यचमांपुनः ॥४४॥
आत्मनाशाय तेनाऽत्र भवत्वित्याह मां हरिः ।
देवतानां हितार्थाय कुरुष्व वचनं मम ॥४५॥
तवाऽपि जीवनोपायं कथयामि सुरोत्तम !। दत्तवान्कृपया मह्यमात्मनामसहस्रकम्॥४६॥
हृदये मां समाधाय जपमन्त्रं ममाऽव्ययम्। षडक्षरं महामन्त्रं तारकं ब्रह्मसञ्ज्ञितम्॥४७॥
ये भजन्ति हि मां भक्तया तेषां मुक्तिर्न संशयः ।
इन्दीवरदलश्यामं पद्मपत्रविलोचनम् ॥४८॥
शङ्खारशार्ङ्गेषुधरं सर्वाभरणभूषितम्। पीतवस्त्रं चतुर्बाहुं जानकीप्रियवल्लभम् ॥४९॥
श्रीरामायनमइत्येवमुच्चार्यं मन्त्रमुत्तमम् । सर्वदुःखहरं चैतत्पापिनामपि मुक्तिदम्॥५०॥
इमंमन्त्रं जपन्नित्यममलस्त्वंभविष्यसि। भस्मास्थिधारणाद्यत्तु सम्भूतंकिल्बिषंत्वयि ॥५१॥
मङ्गलं तदभूत्सर्वं मन्मन्त्रोच्चारणाच्छुभात्। तर्षितो नाशयिष्यामि पापंसर्वं सुरोत्तम !॥५२॥
मदन्यदेवताभक्तिर्जायते न तु सुव्रत !। मनसैवार्चय हृदि मां नाथं पुरुषोत्तमम् ॥५३॥
मदाज्ञां कुरु मत्प्रीत्या सर्वमेतच्छुभं तव। इति सन्दिश्यमां देवि ! विससर्ज मरुद्गणान् ॥५४॥

युग में करूँगा । वे इस मत को अपनाकर निश्चित रूप से पतित हो जायेंगे ॥३९-४०॥ **महादेवजी ने कहा—** हे भामिनि ! भगवान् के द्वारा कहे गये सारी बातों को सुनकर मैं अत्यन्त उद्विग्न और इस लोक में दीन हो गया ॥४१॥ हे नाथ ! उससे तो मेरा निश्चित रूप से नाश हो जायेगा । हे हरे ! मुझे अपनी शक्ति के द्वारा इस कार्य को करना चाहिए ॥४२-४३॥ यह बड़े दुःख की बात है कि आपकी आज्ञा का मुझे उल्लंघन नहीं करना चाहिए । हे देव ! इस तरह से मेरे कहने पर श्रीहरि ने मुझको को आश्वस्त करके कहा कि यह आपका आत्मनाश करने वाला नहीं होगा । देवताओं का कल्याण करने के लिए आप मेरी बात मानें ॥४४-४५॥ हे सुरोत्तम ! मैं आपके भी उज्जीवन का उपाय बतलाता हूँ । मुझ पर कृपा करके अपने सहस्रनामों को उन्होंने प्रदान किया ॥४६॥ उन्होंने कहा अपने हृदय में ध्यान करके मेरे महामन्त्र षडक्षर (ओ विष्णवे नमः) का जप करें यह ब्रह्म संज्ञक तारक मन्त्र है जो लोग भक्ति पूर्वक मेरा भजन करते हैं वे निश्चित रूप से मुक्त हो जाते हैं । नील कमल के समान श्याम वर्ण वाले, कमल दल के समान सुन्दर नेत्र वाले शङ्ख, चक्र, शार्ङ्ग, धनुष और बाण धारण किए हुए, पीताम्बर धारण किए हुए तथा चार भुजाधारी सभी अलङ्कारों से अलंकृत जानकीजी के प्रियतम ॥४७-४८॥ **श्रीरामाय नमः** इस उत्तम और सभी दुःखों को विनष्ट करने वाले मन्त्र का उच्चारण करके पापी जीव भी मुक्त हो जाता है ॥४९-५०॥ इस मन्त्र का नित्य ही उच्चारण करके आप भी निर्मल हो जायेंगे । भस्म तथा अस्थि को धारण करने से आपको जो पाप लगेगा । वह सब मेरे मन्त्र का उच्चारण करने से मङ्गलमय हो जायेगा । मैं हर्षित होकर सभी पापों को नष्ट कर दूँगा ॥५१-५२॥ हे सुव्रत ! ऐसा करने से आपमें मुझसे भिन्न की भक्ति भी नहीं होगी । आप अपने मन से हृदय में विद्यमान सबों के स्वामी मुझ पुरुषोत्तम की पूजा करें ॥५३॥ आप

विसृष्टास्ते ततो देवा निवृत्ताः स्वाश्रमं ययुः ।
ततो मां प्रार्थयामासुर्देवा इन्द्रपुरोगमाः ॥५५॥

इन्द्रादयऊचुः

शीघ्रं कुरु हितं देव ! यथोक्तं हरिणाऽधुना ॥५६॥

महादेव उवाच

देवतानां हितार्थाय वृत्तिं पाखण्डिनां शुभे ! ।
कपालचर्मभस्मास्थिधारणं तत्कृतंमया ॥५७॥
तामसानि पुराणानि यथोक्तं विष्णुना शुभे ! ।
पाषण्डशैवशास्त्राणि यथोक्तंकृतवानहम् ॥५८॥
मच्छत्तयाऽपिसमाविश्यगौतमादिद्विजानपि । वेदबाह्यानिशास्त्राणिसम्यगुक्तंमयाऽनघे ॥५९॥
इमं मतमवष्टभ्य दुष्टाः सर्वे च राक्षसाः । भगवद्विमुखाः सर्वे बभूवुस्तमसावृताः ॥६०॥
भस्मादिधारणं कृत्वा महोग्रतमसावृताः । मामेव पूजयाञ्चकुर्मांसासृक्चन्दनादिभिः ॥६१॥
मत्तो वरप्रदानानि लब्ध्वा मदबलोद्धताः । अत्यन्तविषयासक्ताः कामक्रोधसमन्विताः ॥६२॥
सत्त्वहीनास्तु निर्वीर्या जिता देवगणैस्तदा । सर्वधर्मपरिभ्रष्टाः कालेयान्त्यधमांगतिम् ॥६३॥
ये मे मतमवष्टभ्य चरन्ति पृथिवीतले । सर्वधर्मैश्च रहिताः पश्यन्ति निरयं सदा ॥६४॥
एवं देवहितार्थाय वृत्तिर्मेदेवि ! गर्हिता । विष्णोराज्ञां पुरस्कृत्य कृतं भस्मास्थिधारणम् ॥६५॥
बाह्यचिह्नमिदं देवि मोहनार्थाय विद्विषाम् । अथान्तर्हृदये नित्यं ध्यात्वादेवंजनार्दनम् ॥६६॥

मेरी आज्ञा का पालन करें । आपके लिए यह सबकुछ शुभ होगा । हे देवि ! इस तरह से मुझको कहकर श्रीभगवान् देवताओं को विदा कर दिए ॥५४॥ भेज दिए जाने के बाद वे देवता अपने आश्रमों में चले गये । उसके पश्चात् इन्द्र आदि देवताओं ने मुझसे प्रार्थना किया ॥५५॥ **इन्द्र आदि ने कहा**— हे देव ! जैसा कि श्रीहरि ने इस समय कहा है वैसा आप शीघ्र करें । **महादेवजी ने कहा**— हे शुभे ! देवताओं का कल्याण करने के लिए पाखण्डियों की वृत्ति कपाल, भस्म, अस्थि तथा चर्म आदि को मैंने धारण किया ॥५६-५७॥ हे शुभे ! जैसा कि भगवान् विष्णु ने कहा था मैंने तामस पुराणों तथा पाखण्ड एवं शैवशास्त्रों की रचना की ॥५८॥ मेरी शक्ति ने प्रवेश करके गौतम आदि ब्राह्मणों को भी मैंने वेद बाह्य शास्त्रों को अच्छी तरह से सुनाया ॥५९॥ मेरे इस मत को अपनाकर सभी दुष्ट राक्षस तमोगुण से भारकर भगवद्‌विमुख हो गये ॥६०॥ भस्म आदि धारण करके अत्यन्त उग्र तमोगुण से भरकर मेरी ही पूजा मांस, रुधिर तथा चन्दन आदि से करने लगे ॥६१॥ मुझसे ही वरदान पाकर बल से उद्धत बने हुए विषयों में अत्यन्त आसक्त होकर काम तथा क्रोध से युक्त वे ॥६२॥ सत्त्व हीन और पराक्रम हीन वे देवताओं से जित लिए गये । सभी धर्मों से भ्रष्ट होकर वे काल आने पर अधम गति को प्राप्त करते हैं ॥६३॥ जो लोग मेरे मत को अपनाकर पृथिवी पर संचरण करते हैं सभी धर्मों से रहित वे नारकीय गति को सदा प्राप्त करते हैं ॥६४॥ हे देवि ! इस तरह से देवताओं का कल्याण करने के लिए इस निन्दित वृत्ति को अपनाया हूँ ॥६५॥ हे देवि ! मेरा यह बाह्य रूप है शत्रुओं को मोहित करने के लिए मैंने इसे धारण किया

जपन्नव च तन्मन्त्रं तारकं ब्रह्मवाचकम्। सहस्त्रनामसदृशं विष्णोर्नारायणस्य तु ॥६७॥
षडक्षरं महामन्त्रं रघूणां कुलवर्द्धनम्। जपन्वै सततं देवि सदानन्दसुधाप्लुतम् ॥
सुखमात्यन्तिकं ब्राह्ममश्नामि सततं शुभे ! ॥६८॥

एतत्ते सर्वमाख्यातं त्वया पृष्टं शुभानने ! ।
किमन्यच्छ्रोतुकामाऽसि प्रीत्या तत्परिपृच्छ माम् ॥६९॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्यां संहितायां उत्तरे खण्डेपाषण्डोत्पत्तिवर्णनं नाम पञ्चत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥२३५॥



दो सौ छत्तीसवाँ अध्याय

पार्वत्युवाच

तामसानि च शास्त्राणि समाचक्ष्व ममाऽनघ ! ।
सम्प्रोक्तानिचयैर्विप्रैर्भगवद्भक्तिवर्जितैः ॥
तेषां नामानि क्रमशः समाचक्ष्व सुरेश्वर ! ॥१॥

रुद्र उवाच

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि तामसानियथाक्रमम् ।
येषां स्मरणमात्रेणमोहःस्याज्ज्ञानिनामपि ॥२॥

है। हृदय में मैं नित्य ही भगवान् जनार्दन का ध्यान करके ॥६६॥ श्रीभगवान् के ही ब्रह्म के वाचक उनके मन्त्र का जप करते हुए भगवान् विष्णु के सहस्त्रनाम के ही समान उनके षड्क्षर महामन्त्र रघुवंश के बढ़ाने वाले का जप करते हुए हे देवि ! निरन्तर मैं आनन्द से भरकर आत्यन्तिक ब्राह्म सुख का अनुभव करता हूँ ॥६७-६८॥ हे शुभे ! तुमने जे पूछा था उसे मैंने कह दिया तुम दूसरा क्या सुनना चाहती हो ? उसे तुम मुझसे प्रेम पूर्वक पूछो ॥६९॥

इस तरह श्रीपद्ममहापुराण के छठे उत्तर खण्ड के उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत पाषण्ड की उत्पत्ति वर्णन नामक दो सौ पैंतिसवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ।।२३५।।



उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत अठारह पुराण तथा अनेक दर्शनों के वर्णन के प्रसङ्ग में सात्त्विक आदि शास्त्रों का वर्णन

पार्वतीजी ने कहा— हे अवध ! आप मुझे तामस पुराणों को बतलायें जिन सबों को भगवद् भक्ति रहित ब्राह्मणों ने कहा है। हे सुरेश्वर ! उन सबों का नाम आप मुझे क्रमशः बतलायें ॥१॥ **रुद्र ने कहा—** हे देवि ! मैं तामसों के नाम को क्रमानुसार बतलाता हूँ सुनो। उन सबों का स्मरण करने से ज्ञानी पुरुषों

मच्छक्त्यावेशितैर्विप्रैः प्रोक्तानि चततः शृणु ॥३॥
प्रथमं हि मयैवोक्तं शैवं पाशुपतादिकम् ।
कणादेन तु सम्प्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत् ।
गौतमेनतथान्यायंसाङ्ख्यंतुपिलेन वै ॥४॥
धिषणेन तथा प्रोक्तं चार्वाकमतिगर्हितम् । दैत्यानां नाशनार्थाय विष्णुनाबुद्धरूपिणा ॥५॥
बौद्धशास्त्रं महत्प्रोक्तं नग्ननीलपटादिकम् । मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमुच्यते ॥६॥
मयैव कथ्यते देवि ! कलौ ब्राह्मणरूपिणा ।
अपार्थं श्रुतिवाक्यानां दर्शयँल्लोकगर्हितम् ॥७॥
कर्मस्वरूपं त्याज्यत्वं यत्र वै प्रतिपाद्यते । सर्वकर्मपरिभ्रष्टो विकर्मस्थः स उच्यते ॥८॥
परेशजीवयोरैक्यं मयाऽत्र प्रतिपाद्यते। ब्रह्मणोऽत्र परं रूपं निर्गुणं वक्ष्यते मया ॥९॥
सर्वस्य जगतोऽप्यत्र मोहनार्थं कलौ युगे। वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायावादमवैदिकम् ॥१०॥
मयैव वक्ष्यते देवि ! जगतां नाशकारणात् ।
द्विजन्मना जैमिनिना पूर्वं वेदमपार्थकम् ॥११॥
निरीश्वरेण वादेन कृतं शास्त्रं महत्तरम्। शास्त्राणि चैव गिरिजे तामसानि निबोधमे ॥१२॥
पुराणानि च वक्ष्यामि तामसानि यथाक्रमात् ।
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा ॥१३॥
तथैव नादीयं तु मार्कण्डेयं तु सप्तमम्। आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यं नवमं तथा ॥१४॥
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं स्मृतम् । द्वादशं च वराहं च वामनं च त्रयोदशम् ॥१५॥
कौर्मं चतुर्दशं प्रोक्तं मात्स्यं पञ्चदशं स्मृतम् ।
षोडशं गारुडम्प्रोक्तं स्कान्दं सप्तदशं स्मृतम् ॥१६॥

को भी मोह जो जाय ॥२॥ पहले तो मैंने ही शैव, पाशुपत मत आदि को कहा है । उसके पश्चात् मेरी शक्ति से आविष्ट ब्राह्मणों ने जिन सबों को कहा है उसे तुम सुनो ॥३॥ कणाद ने महान वैशेषिक शास्त्र का वर्णन किया । गौतम महर्षि ने न्यायशास्त्र का तथा कपिल ने सांख्य शास्त्र का प्रणयन किया ॥४॥ बृहस्पति ने अत्यन्त निन्दित चार्वाक दर्शन का प्रणयन किया । दैत्यों का नाश करने के लिए बुद्ध रूपधारी विष्णु ने ॥५॥ महान् बौद्ध शास्त्र का प्रणयन किया, नील पट आदि, मायावाद आदि असत् शास्त्र को प्रच्छन्न बौद्ध कहते हैं ॥६॥ हे देवि ! कलि में ब्राह्मण रूपधारी मैंने लोक निन्दित श्रुतियों का अपार्थ करने वाला दर्शन बनाया ॥७॥ उसमें कर्मों को परित्याज्य बतलाया गया है । सभी कर्मों से भ्रष्ट विकर्मस्थ वह कहलाता है ॥८॥ इसमें जीव और परमात्मा की एकता बतलायी गयी है । उसमें मैंने परब्रह्म का निर्गुण रूप प्रतिपादित किया है ॥९॥ कलियुग में सबों को मोहित करने के लिए वेदार्थ के ही समान अवैदिक मायावाद का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है ॥१०॥ हे देवि ! मैं ही जैमिनि ब्राह्मण के रूप में सम्पूर्ण वेद के अपार्थ स्वरूप संसारियों का नाश करने के लिए शास्त्र का निर्माण किया है ॥११॥ निरीश्वरवाद के द्वारा मैंने अत्यन्त महान शास्त्र बनाया है । हे पार्वति अब मैं तामस शास्त्रों को बतलाता हूँ ॥१२॥ अब मैं क्रमशः पुराणों को बतलाता हूँ । ब्रह्म पुराण, पद्मपुराण, विष्णु पुराण, शिवपुराणा, भागवत पुराण, नारदीय पुराण, सातवाँ मार्कण्डेय पुराण, आठवाँ अग्नि पुराण, नवाँ भविष्य पुराण ॥१३-१४॥ दशवाँ ब्रह्मवैवर्त पुराण, ग्यारहवाँ लिङ्ग पुराण, बारहवाँ वाराह पुराण, तेरहवाँ वामन पुराण, चौदहवाँ कूर्म पुराण,

अष्टादशं तु ब्रह्माण्डं पुराणानि यथाक्रमम्। मात्स्यं कौर्मं तथालैङ्गंशैवंस्कान्दंतथैवच॥१७॥
आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे । वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम् ॥१८॥
गारुडं च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने। सात्त्विकानि पुराणानि विज्ञेयानिशुीानिवै ॥१९॥
ब्रह्माण्डं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं तथैव च। भविष्यं वामनं ब्राह्मं राजसानि निबोध मे ॥२०॥

सात्त्विका मोक्षदाः प्रोक्ता राजसाः स्वर्गदाः शुभाः ।
तथैव तामसा देवि ! निरयप्राप्तिहेतवः ॥२१॥

तथैव स्मृतयःप्रोक्तात्रृषिभिस्त्रिगुणान्विताः। सात्त्विकाराजसाश्चैवतामसाःशुभदर्शने ॥२२॥
वासिष्ठं चैव हारीतं व्यासंपाराशरन्तथा। भारद्वाजंकाश्यपंचसात्विकामुक्तिदाःशुभाः ॥२३॥

मानवं याज्ञवल्क्यं चाऽप्यात्रेयं दाक्षमेव च ।
कात्यायनंवैष्णवंचराजसाः स्वर्गदाशुभाः ॥२४॥

गौतमं बार्हस्पत्यं च सांवर्तं च यमंस्मृतम् । शाङ्खं चौशनसं चेतिमामसानिरयप्रदाः ॥२५॥
किमत्र बहुनोक्तेन पुराणेषु स्मृतिष्वपि। तामसा नरकायैव वर्जयेत्तान्विचक्षणः ॥२६॥
एत्तते सर्वमाख्यातं प्रसङ्गाच्छुभदर्शने ! । शेषं च वैभवावस्थां हरेर्वक्ष्यामि ते श्रृणु ॥२७॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्यां संहितायां उत्तरे खण्डे
तामसशास्त्रकथनं नाम षट्‌त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥२३६॥



पन्द्रहवाँ मत्स्य पुराण, सोलहवाँ गरुड़ पुराण, सत्रहवाँ स्कन्द पुराण और अठारहवाँ ब्रह्माण्ड पुराण ये क्रमशः पुराण कहे गये हैं । इनमें से मत्स्य कूर्म, लिङ्ग, शिव, स्कन्द तथा अग्नि पुराण ये छह पुराण तामस पुराण हैं । विष्णु, नारदीय, और भागवत ॥१५-१८॥ गरुड, पद्म तथा वाराह पुराण हे शुभदर्शने पार्वति इन छह पुराणों को शुभ सात्त्विक पुराण जानना चाहिए ॥१९॥ ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य, वामन तथ ब्रह्म पुराण इनको तुम राजस पुराण जानो ॥२०॥ सात्त्विक पुराण मोक्ष प्रदान करने वाले, राजस पुराण स्वर्ग देने वाले तथा तामस पुराण नरक देने वाले बतलाये गये हैं ॥२१॥ उसी तरह ऋषियों ने त्रिगुणात्मक स्मृतियों को भी कहा है । सात्त्विक, राजस एवं तामस ॥२२॥ वसिष्ठ स्मृति, हारीत स्मृति, व्यास स्मृति, भारद्वाज स्मृति, कश्यप स्मृति ये सभी स्मृतियाँ सात्त्विक तथा मुक्ति प्रदान करने वाली हैं ॥२३॥ मनु स्मृति, याज्ञवलक्य स्मृति, अत्रि स्मृति, दक्ष स्मृति, कात्यायन स्मृति तथा विष्णु स्मृति ये राजस स्मृतियाँ हैं और स्वर्ग प्रदान करने वाली हैं ॥२४॥ गौतम स्मृति बृहस्पति स्मृति, सांवर्त स्मृति, यम स्मृति, शङ्ख स्मृति तथा शुक्र स्मृति ये तामस स्मृतियाँ हैं और नरक देने वाली हैं ॥२५॥ इस विषय में बहुत कहने से कौन सा लाभ है ? पुराणों तथा स्मृतियों में जो तामस हैं वे नरक प्रदान करते हैं । अतएव निपुण व्यक्ति को उन सबों को त्याग देना चाहिए ॥२६॥ हे शुभ दर्शने ! इन सारी बातों को मैंने प्रसङ्ग वशात् कहा है । अब मैं अवशिष्ट श्रीहरि की विभवावस्था का वर्णन करूँगा ॥२७॥

इस तरह श्रीपद्ममहापुराण के छठे उत्तर खण्ड के उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत दो सौ छत्तीसवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ।।२३६।।

